इकाई 10 धर्मः दर्खाइम और वेबर*

संरचना

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 धर्म के समाजशास्त्र में एमिल दर्खाइम का योगदान

- 10.2.1 धर्म की व्याख्या – मान्यताएँ और अनुष्ठान
- 10.2.2 टोटमवाद का अध्ययन
- 10.2.3 धर्म और विज्ञान

10.3 मैक्स वेबर का योगदान

- 10.3.1 भारतीय धर्म
- 10.3.2 चीनी धर्म
- 10.3.3 प्राचीन यहूदी धर्म

10.4 दर्खाइम और वेबरः तुलना

- 10.4.1 विश्लेषण की इकाइयाँ
- 10.4.2 धर्म की भूमिका
- 10.4.3 देवता, भूत-प्रेत और पैगम्बर
- 10.4.4 धर्म और विज्ञान

10.5 सारांश

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.6 संदर्भ

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपके लिए संभव होगा :

- धर्म से संबधित एमिल दर्खाइम के विचारों का विवेचन करना;
- धर्म के समाजशास्त्र में मैक्स वेबर के योगदान पर चर्चा करना; तथा
- इन दोनों चिंतकों के दृष्टिकोण में अंतर बताना।

10.1 प्रस्तावना

जैसा कि आपको मालूम है, धर्म को मानव समाज का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। धर्म का संबध मनुष्यों की मान्यताओं और अनुष्ठानों की उस प्रणाली से है जो उसके क्रियाकलापों और विचारधाराओं को मार्गदर्शित करती है। धर्म वह माध्यम है जिसके द्वारा लोग एकजुट होते हैं, जिससे उनमें एकता और आत्मीयता की भावना पैदा होती है। कभी-कभी इसका परिणाम बिल्कुल विपरीत होता है जब कोई एक धार्मिक समूह दूसरे समूह के प्रति विरोध प्रकट करने के उद्देश्य से काम करता है। धर्म वह माध्यम है जिसके द्वारा लोग जीवन की समस्याओं और संकटों के समाधान ढूँढते हैं। धर्म एक सामाजिक सत्य है और

*यह इकाई ESO-13, इकाई 19 से अनुग्रहित एवं संपादित है।

समाज की अन्य व्यवस्थाओं से उसका गहरा संबध है। धर्म, समाजशस्त्रियों और नृशास्त्रियों के लिये हमेशा से रोचक विषय रहा है। इस संबध में दर्खाइम और बेवम के योगदान अत्यंत महव्वपूर्ण है।

इस इकाई में आइए हम देखें कि किस प्रकार दर्खाइम और वेबर ने अपनी समाजशास्त्रीय पद्धतियों का प्रयोग धर्म के अध्ययन द्वारा किया।

भाग 10.2 में धर्म के समाजशास्त्र में दर्खाइम के योगदान को प्रस्तुत किया जायेगा। उसकी महत्वपूर्ण कृति द एलिमेंटरी फार्म्स ऑफ रिलीजस लाइफ (1912) में उसकी प्रमुख संभावनाओं पर चर्चा की जायेगी। भाग 10.3 में धर्म संबंधित वेबर की प्रमुख अवधारणाओं पर विचार किया जायेगा। अंतिम भाग 10.4 में इन चिंतको के दृष्टिकोण में अंतर पर नजर डाली जायेगी।

10.2 धर्म के समाजशास्त्र में एमिल दर्खाइम का योगदान

द एलिमेंटरी फार्म्स ऑफ रिलीजस लाइफ दर्खाइम की महत्वपूर्ण कृति है। इस की प्रमुख स्थापनाओं पर आज भी विद्धानों और विद्यार्थियों के बीच वाद विवाद होते है।

इससे पहले कि इस कृति के प्रमुख विचारों पर चर्चा करें, आइए, एक महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर नजर डालें। दर्खाइम ने विश्व के विकसित धर्मो के अध्ययन (जैसे कि हिन्दू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म) की अपेक्षा धर्म के सरलतम रूप पर ही ध्यान क्यों केन्द्रित किया?

आइए एक उदाहरण द्वारा इस प्रश्न का उत्तर दें।

यदि आपको साइकिल चलाना आता है तो मोटर साईकिल चलाने में आपको ज्यादा दिक्कत नहीं होगी। इसी तरह यदि आप धर्म के सरल रूप समझें, तो जटिल, सुव्यवस्थित धर्मों को समझने में सहायता मिलेगी। धर्म का सरलतम रूप उन समाजों में पाया जा सकता है जिनकी सामाजिक व्यवस्था उतनी ही सरल हो, यानी आदिम जनजातीय या आदिवासी समाज। दर्खाइम का उद्देश्य ''आदिवासी'' (aborigines) समाज में आदिवासी धर्म के अध्ययन द्वारा जटिल विचार प्रणालियों और मान्यताओं पर प्रकाश डालना था।

अगले उपभागों में इसी प्रयास का विवेचन किया जायेगा। सबसे पहले आइए देखें कि दर्खाइम किस प्रकार धर्म की व्याख्या करता है।

10.2.1 धर्म की व्याख्या–मान्यताएँ और अनुष्ठान

दर्खाइम का कहना है कि धर्म की व्याख्या करने से पहले हमें अपनी पूर्वाकल्पनाओं और पूर्वाग्रहों को दूर करना होगा। वह इस मान्यता को नकारता है कि देवताओं और भूत-प्रेतों जैसी रहस्यम और अलौकिक बातों मात्र से धर्म संबधित है। उसके अनुसार धर्म न सिर्फ असाधारण बातों से बल्कि आम जीवन की सामान्य घटनाओं से संबद्ध है। सूर्योदय और सूर्यास्त, ऋतुओ का चक्र, पेड़-पोधों, फसलो का उगना-बढ़ना, नये जीवों का जन्म सब धार्मिक विचारों के विषय है।

धर्मो की व्याख्या करने के लिये विभिन्न धार्मिक प्रणालियों का अध्ययन जरूरी है, जिससे उनके समान तत्वों को पहचाना जा सके। दर्खाइम (1912:38) का कहना है कि ''धर्म की परिभाषा उन समान गुणों के संदर्भ में ही की जा सकती है जो हर धर्म में पाये जाते हैं।''

दर्खाइम के अनुसार सभी धर्मो में दो मूल तत्व होते है धार्मिक विश्वास और धार्मिक अनुष्ठान। ये विश्वास सामूहिक प्रतिनिधान (collective representations) हैं (जिनका

विस्तृत अध्ययन खंड 3 में किया जा चुका है), और धार्मिक अनुष्ठान समाज द्वारा स्थापित वे क्रियाएँ हैं जो इन विश्वासों से प्रभावित होती हैं।

जैसा कि आपने पहले पढ़ा है, धार्मिक विश्वास पवित्र और लौकिक इस विभाजन पर आधारित है। पवित्र और लौकिक क्षेत्र एक दूसरे के विपरीत हैं और इस आपसी भेद को धार्मिक अनुष्ठानों और कर्मकांडो द्वारा नियंत्रित किया जाता है। पवित्र अथवा दिव्य क्षेत्र वह है जिसे उच्च स्तर दिया जाता है और जिसके प्रति सम्मान अथवा भय की भावना पैदा होती है। दिव्य क्षेत्र की लौकिक क्षेत्र से अधिक महत्व और प्रतिष्ठा दी जाती है। उसके अस्तिव और शक्ति को सामाजिक नियमों द्वारा सुरक्षित किया जाता है। दूसरी और लौकिक क्षेत्र के अन्तर्गत आम दैनिक जीवन के सामान्य पहलू शामिल हैं। दर्खाइम के अनुसार दिव्य और लौकिक क्षेत्रों को एक दूसरे से अलग रखना आवश्यक माना जाता है, क्योंकि वे एक दूसरे से मूल रूप से भिन्न, विपरीत और विरोधी हैं।

आइए, इस बात को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें। मंदिर में जूते पहनकर जाना मना क्यों है,? जूते या चप्पल आम जीवन में इस्तेमाल किये जाते हैं, अतः वे लौकिक क्षेत्र से संबद्ध है। किन्तु मन्दिर को दिव्य, शुद्ध स्थल माना जाता है। जूतों की गंदगी से मंदिर को सुरक्षित रखना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार, दिव्य और लौकिक क्षेत्रों को अलग रखा जाता है।

दर्खाइम के अनुसार धार्मिक विश्वास और अनुष्ठानों को एकीकरण धर्म का स्वरूप लेता है। विश्वास से उसका तात्पर्य है विभिन्न नियम, नैतिक विचार, शिक्षा, और मिथक। ये सब वे सामूहिक प्रतिनिधान है जो व्यक्ति के बाहर होते हुए भी उसे धार्मिक व्यवस्था से एकीकृत करते है। विश्वासों के माध्यम से व्यक्ति दिव्य क्षेत्र और उसके साथ अपना संबंध समझ सकते है, जिसके अनुरूप वह अपना जीवन बिता सकते हैं।

विश्वासों पर आधारित धार्मिक अनुष्ठान वे नियम है जो दिव्य क्षेत्र से संबधित व्यक्तिगत व्यवहार का मार्ग दर्शन करते हैं। धार्मिक अनुष्ठान सकारात्मक होते हैं (जिससे व्यक्ति को दिव्य क्षेत्र के नजदीक लाया जाता है, जैसे कि हवन या यज्ञ) और नकारात्मक भी (इनमें दिव्य और लौकिक क्षेत्रों को एक दूसरे से दूर रखा जाता है)। उदाहरण के तौर पर शुद्धिकरण, उपवास, तपस्या आदि धार्मिक अनुष्ठान विश्वासों को और अधिक तीव्र या शक्तिशाली बनाते हैं। व्यक्तियों को एक दूसरे के करीब लाकर उनके सामजिक स्वभावों को सशक्त किया जाता है। धार्मिक अनुष्ठान सामूहिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। जैसा कि आपने पढ़ा है, सामूहिक चेतना का अर्थ है कि समान मूल्य, विश्वास और विचार जो सामजिक एकात्मता को संभव बनाते हैं (देखिए गिडन्स 1974:84-89)

धर्म की व्याख्या विश्वासों और अनुष्ठानों की शब्दावली में करने से एक समस्या सामने आती है, क्योंकि इसके अंतर्गत जादू-टोना भी शामिल हो जाता है। क्या धर्म और जादू-टोना में कोई अंतर नही? नृशास्त्री रॉबर्टसन् स्मिथ मामला है जो व्यक्तिगत स्तर पर किया जाता है। उदाहरण के लिये यदि जादू में विश्वास करने वाला अपने पड़ोसी से ज्यादा सफल होना चाहे तो उसे जादू-टोना करवा कर पड़ोसी पर विपत्ति लाने का प्रयास करना होगा। ओक्षा (magician) को पैसा देकर तंत्र-मंत्र के द्वारा जादू में विश्वास करने वाले के लिए अपने पड़ोसी की फसल नष्ट करवाना संभव है, या उसकी गाय-भैंसे मरवाना संभव है। जादू-टोने में ओझा और ग्राहक के बीच संबंध निजी स्वार्थ से प्रेरित होता है। यह केवल व्यक्तिगत इच्छाओं के अनुरूप प्रकृति को प्रभावित करने का एक प्रयास है।

दूसरी ओर धर्म का सार्वजनिक और सामाजिक रूप है। भक्तों के बीच सामाजिक बंधन होते हैं, जो उन्हें समान जीवन बिताने वाले एक समूह के रूप में एकीकृत करते हैं। इन पक्षों

पर ध्यान देते हुए दर्खाइम ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि पवित्र चीजों के सबंधित विश्वासों और अनुष्ठानों की एकीकृत व्यवस्था को धर्म कहते हैं और इन विश्वासों और अनुष्ठानों को मानने वाले अनुयायी एक नैतिक समूह में एकीकृत होते हैं।

आइये अब हम देखें कि किस प्रकार आस्ट्रेलिया के आदिवासी समूह में प्रचलित टोटमवाद का अध्ययन कर दर्खाइम ने धर्म के सरलतम रूप को समझने का प्रयास किया। लेकिन इससे पहले, बोध प्रश्न 1 के उत्तर दीजिए।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित वाक्यों को रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा पूरा कीजिए।

   क) दर्खाइम ने धर्म के सरलतम रूप का अध्ययन किया क्योंकि

   .....

   .....

   .....

   ख) दर्खाइम के अनुसार प्रत्येक धर्म में पाए जाने वाले समान तत्व

   .....

   .....

   .....

   ग) लौकिक क्षेत्र ..... से संबद्ध है।

ii) दर्खाइम धर्म और जादू-टोने के बीच किस प्रकार भेद करता है? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

10.2.2 टोटमवाद का अध्ययन

जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है, दर्खाइम का यह मानना था कि जटिल धर्मो को समझने के लिये सरलतम धर्मों को समझना आवश्यक है। उसके अनुसार टोटमवाद धर्म का सबसे सरल रूप है। मध्य आस्ट्रेलिया भरपूर मात्रा में उपलब्ध थीं। समाजशास्त्री और नृशास्त्री इनकी सामजिक व्यवस्था को सरलतम मानते थे।

यह धर्म उन समाजों में पाया जाता है जिनमें सामाजिक व्यवस्था के आधार कुल (clan) हैं। कुल के सदस्य मानते है कि वे एक ही पूर्वज के वंशज है। यह पूर्वज या तो कोई या वनस्पति हो सकता है अथवा कोई वस्तु। प्रतीक के रूप में इस पूर्वज को टोटम-वस्तु कहते हैं। इसी वस्तु से कुल अपना नाम और पहचान प्राप्त करता है। टोटम नाम मात्र नही, बल्कि एक चिन्ह है जो कि अक्सर उस कुल की विभिन्न वस्तुओं पर यहाँ तक कि लोगों के शरीर पर अंकित रहता है। इससे लौकिक वस्तुओं को विशेष महत्व मिलता है। वे पवित्र बन जाती हैं। टोटम वस्तु के संबंध में अनेक प्रतिबंध होते हैं। उसकी हत्या करना या उसे खाना मना है। उसे सम्मान का दर्जा दिया जाता है। कुल से संबंधित हर वस्तु टोटम से संबद्ध होती

है और टोटम का अंग मानी जाती है। खून का रिश्ता न होते हुए भी कुल के सदस्यों को एक ही वंश का माना जाता है, क्योंकि उनका नाम, और चिन्ह एक है। परिणामस्वरूप कुल से बाहर विवाह करना एक महत्वपूर्ण नियम होता है। इस प्रकार इन सरल समाजों में धर्म और सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से अंतर्संबंधित है।

टोटम वस्तु और उससे संबधित अन्य वस्तुओं को पवित्र क्यों माना जाता है? दर्खाइम के अनुसार टोटम-प्राणी या वनस्पति को वास्तव में पूजा नही जाता है बल्कि एक ऐसी अमूर्त अदृश्य शक्ति की पूजा होती है जो हर भौतिक वस्तु में छिपी रहती है। इस शक्ति को अनेक नाम दिये गये है, जैसे कि समोआ में ''माना'', मेलननीशिया में ''वाकान'' और कु उत्तर अमरीकी जनजातियों में ''ओरेंडा''। टोटम-वस्तु उस टोटम सिद्धांत का प्रतीक मात्र है जो कि स्वयं कुल ही है। कुल को अपना अस्तिव प्रदान किया जाता है। टोटम वस्तु द्वारा उसे मूर्त रूप दिया जाता है। दर्खाइम के अनुसार ''ईश्वर'' की परिकल्पना समाज के दैवीकरण से उत्पन्न होती है। दूसरे शब्दों में ''ईश्वर''की परिकल्पना द्वारा समाज का नया रूप दिया जाता है। समाज को क्यों पूजा जाता है? दर्खाइम का कहना है कि समाज व्यक्ति की अपेक्षा हर क्षेत्र में अधिक शक्तिशाली है। उसका स्वतंत्र अस्तिव है और उसकी शक्ति के प्रति भय की भावना पैदा होती है। अतः उसकी सत्ता सम्मानीय होती है। उदाहरण के लिये जब युद्ध में किसी युवा ने राष्ट्रीय ध्वज को ऊँचा रखने के लिये अपनी जान न्यौछावन की तो कहा जाएगा कि उसने ध्वज के लिये नही बल्कि अपने राष्ट्र के लिये अपनी जान न्यौछावन की। ध्वज राष्ट्र का चिन्ह मात्र है।

समाज व्यक्तिगत चेतना द्वारा ही अभिव्यक्त होता है। समाज हमसे व्याग और समर्पण के आग्रह द्वारा हमारे अंदर की पवित्रता की भावना को बढ़ावा देता है। धार्मिक समारोहों और त्यौहारों के दौरान यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कुल के सारे सदस्य धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। सामूहिक उत्तेजना और उत्साह की भावना पैदा होती है जिनसे सामाजिक बंधन और अधिक मजबूत बनते हैं और सामाजिक एकात्मकता को बढ़ावा मिलता है।

संक्षेप में कुल के सदस्य अपने समान पूर्वज को पूजते हैं। यह टोटम वस्तु का रूप लेता है, जिससे कुल को अपना नाम और विशिष्ट पहचान मिलती है। लेकिन दर्खाइम का मानना है कि वास्तव में स्वयं कुल की ही पूजा टोटम वस्तु के माध्यम से होती है। धर्म का वास्तविक अर्थ है समाज को दिव्य रूप देकर उसकी पूजा करना, क्योंकि उसे व्यक्तियों से अधिक शक्तिशाली माना जाता है व्यक्ति पर समाज भौतिक और नैतिक प्रतिबंध लगाता है। समाज को पूजने से उसके सदस्यों में एकात्मकता और उत्साह की भावना को बढ़ावा मिलता है जिससे वे सामूहिक जीवन और उसकी सामूहिक अभिव्यक्ति में भाग ले सकते है।

आदिम अथवा सरलतम धर्मो पर दर्खाइम ने अनेक रोचक और महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये हैं। उसने इन विचारों का जटिल विचार प्रणालियों को समझने में किस प्रकार उपयोग किया? जैसा कि आपको मालूम है, आधुनिक युग में विज्ञान का तीव्र गति से विकास हुआ है। क्या धर्म और विज्ञान एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत है? अगले उप-भाग में आइए देखें कि इस संबंध में दर्खाइम का मत क्या है।

सोचिए और करिए 1

भारत में प्रचलित किन्हीं दो धर्मों के पाँच विश्वासों एवं अनुष्ठानों की सूची बनाइए। अपनी सूची की तुलना अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों की सूची से कीजिए।

10.2.3 धर्म और विज्ञान

दर्खाइम के अनुसार धार्मिक विचारधाणाओं से ही वैज्ञानिक विचारधारा की उत्पत्ति हुई। धर्म और विज्ञान दोनों प्रकृति, मानव जाति और मानव समाज से संबधित हैं। वस्तुओं का वर्गीकरण उनकी व्याख्या और उनके बीच पारस्पारिक संबंधों को समझने का प्रयास धर्म और विज्ञान दोनों द्वारा किया जाता है।

विज्ञान वास्तव में धार्मिक विचारों का अधिक शुद्ध और विकसित रूप है। बल और शक्ति जैसी वैज्ञानिक परिकल्पानाँ मूलतः धार्मिक परिकल्पनाएँ हैं। दर्खाइम का विश्वास है कि ऐसा समय आयेगा। जब धार्मिक विचारों का स्थान विज्ञान ले लेगा। वह इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट करता है कि समाज-विज्ञानों में धर्म का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है।

धार्मिक विचार और वैज्ञानिक विचार दोनों सामूहिक प्रतिनिधान है, अतः उनके बीच संघर्ष होना असंभव है। धर्म और विज्ञान दोनों ही सार्वभौमिक सिद्धांत की खोज करने के दो प्रकार से प्रयास हैं। उनका उद्देश्य मानव-जाति को व्यक्तिगत स्वभाव की सीमाओं से बाहर लाकर एक ऐसी जीवन पद्धति को प्रोत्साहित करना है जो एक साथ व्यक्तिवादी और सामूहिक हो। संपूर्ण मानव कहलाने के लिये व्यक्ति को समाज की आवश्यकता है। व्यक्ति और समाज को एक बनाने में धर्म और विज्ञान दोनों सहायक होते हैं।

हमने देखा कि किस प्रकार दर्खाइम धर्म का अध्ययन सामूहिक एकात्मकता के संदर्भ में करता है। सामूहिक एकात्मकता व्यक्तियों में एकता उत्पन्न कर तथा समाज की पूजा करवा कर और अधिक मजबूत और गहरी बन जाती है।

दर्खाइम के विचारों ने विशेष कर इंग्लैड और फ्रांस के समाजशास्त्रियों और नृशास्त्रियों को प्रभावित किया। उसका भाँजा मार्सेल मॉस उन महत्वपूर्ण नृशास्त्रियों में से था जिन्होंने दर्खाइम की पद्धति को अपनाया। उस के विषय में आपको कोष्ठक 10.1 में जानकारी दी गई है।

कोष्ठक 10.1: मार्सेल मॉस

मार्सेल मॉस (1872.1950) एमिल दर्खाइम का भांजा था लोरै (फ्रांस) के एक आत्मीय, धर्मनिष्ठ यहूदी परिवार में उसका जन्म हुआ। किन्तु मॉस ने यहूदी धर्म को नकार दिया। मॉस का अपने मामा के प्रति बहुत लगाव था और उसी के मार्गदर्शन में उसने बोर्दो में दर्शन-शास्त्र का अध्ययन प्रारंभ किया। दर्खाइम ने मार्सेल को पढ़ाई में बहुत सहायता की। इनके इस आपसी लगाव से एक ऐसा बौद्धिक संबंध पैदा हुआ जिसके परिणामस्वरूप फार्म्स ऑफ प्रिमिटिव क्लासिफकेशन (दर्खाइम और मॉस, 1903) और ऐसी अन्य कृतियां लिखी गई।''ऐनी सोश्योलोजीक'' नामक दर्खाइम द्वारा स्थापित पत्रिका में मॉस संपादक के रूप में काम करने लगा। इसी दौरान अन्य मेधावी नौजवान विद्धानों से उसका परिचय हुआ, जिनके साथ वह काम करने लगा। हयूबैर्ट, फॉसोने, बीशा के साथ उसने धर्म, जादू-टोना, यज्ञ, बलि, प्रार्थना, स्वंय की परिकल्पना इत्यादि विषयों पर महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किये।

सैक्रिफाइस : इट्स नेचर एंड फंकशन (हयूबर्ट और मॉस 1899) में यज्ञ का अध्ययन किया गया, जिसे पवित्र और लौकिक क्षेत्रों के बीच संपर्क के रूप में देखा गया। जिस वस्तु की यज्ञ में अहुति दी जाती है, उसका विनाश हो जाता है।

द गिफ्ट (1925), मॉस की सबसे महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है। प्राचीन समाजों में पायी जाने वाली भेंटों की लेन-देन की प्रणालियों पर मॉस ने ध्यान केन्द्रित किया। उसकी मुख्य परिकल्पनाएं इस प्रकार थीः

i) लेन-देन, जिसमें लेना, देना और भरपाई शामिल है। ये प्रत्येक समाज में पाये जाते है,

ii) भेंटों का आदान-प्रदान सभी सामाजिक बंधनों को मजबूत करता है, चाहे वे सहकारी, प्रतिस्पर्धात्मक या संघर्षमय हों। मॉस ने सामजिक व्यवस्था और लेन-देन के स्वरूप के बीच अंतर्संबध दिखाने का प्रयास किया।

दोनो महा-युद्ध मॉस के जीवन में अनेक विपत्तियां लाये। पहले महा-युद्ध में उसने अनेक मित्र और सहकर्मी खो दिये। उसके प्रिय मामा दर्खाइम का पुत्र आंद्रे युद्ध में शहीद हो गया। यह सदमा दर्खाइम बर्दाशत न कर सका और जल्द ही वह चल बसा। दूसरे महायुद्ध में फ्रांस ने जर्मन सत्ता के दौरान मित्रों-सहकर्मियों को खोने का अनुभव उसे दोबारा झेलना पड़ा जिससे उसके मानसिक संतुलन पर बुरा असर हुआ। उसकी अनेक कृतियाँ अधूरी ही रह गई। वह अपने बहुस्तरीय व्यापक लेखों को इकट्ठा नही कर सका। 1950 में मॉस का देहान्त हो गया। आगे वाली पीढ़ी के लिये उसने एक महत्वपूर्ण बौद्धिक विरासत छोड़ दी। विशेष तौर पर ब्रिटिश और फ्रांसीसी समाजशास्त्री और नृशास्त्री उसके विचारों से अत्यंत प्रभावित हुए।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो पंक्तियों में लिखिए।

i) टोटम पर आधारित कुल के सदस्य दूसरे कुल में ही विवाह क्यों करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) दर्खाइम के अनुसार समाज को क्यों पूजा जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) दर्खाइम का कहना है कि धर्म और विज्ञान के बीच संघर्ष असंभव है। क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

10.3 मैक्स बेबर का योगदान

मैक्स वेबर द्वारा प्रस्तुत धर्म के समाजशास्त्रीय अध्ययन का आधार है व्यक्तियों को कर्ता के रूप में देखना, और कर्ता द्वारा अपने परिवेश संबधित व्यक्तिपरक अर्थ को समझना। वेबर अपना अध्ययन धार्मिक नीतियों या मान्यताओं पर केन्द्रित करता है, और अन्य सामाजिक उप-व्यवस्थाओं (जैसे कि अर्थव्यवस्थाओं और राजनीति) के साथ इनका पारस्परिक संबंध भी देखता है। इस प्रकार, वेबर की पद्धति में इतिहास का महत्व स्पष्ट होता है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, वेबर ने धर्म संबंधी विभिन्न कृतियाँ लिखी, जिनमें द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म और प्राचीन भारतीय चीनी और यहूदी धर्म के तुलनात्मक अध्ययन प्रमुख है, देखिए इस पुस्तक के अंत में दी गई संदर्भ ग्रंथ सूची। इस भाग में वेबर की धर्म संबंधित तुलनात्मक और ऐतिहासिक दृष्टि को 'स्पष्ट करने के लिये विश्व में विभिन्न धर्मों के बारे में उसके विचारों पर नजर डाली जायेगी। इस प्रकार में हमने प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म का विवेचन तो नही किया है, फिर भी यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है।

इस कृति के मुख्य विचारों के बारे में आपने पहले विस्तार से पढ़ा है। इस खंड की इकाई 11 में भी (जिसमें पूँजीवाद के संबंध में वेबर के विचार दिये जायेंगे) इस पर पुनः चर्चा होगी। फिर भी आपको यह सलाह दी जाती है। आइए, अब वेबर द्वारा प्रस्तुत विश्व के विभिन्न धर्मों से संबन्धित कुछ मुद्दों का संक्षेप में अध्ययन करें। सबसे पहले भारतीय धर्मों पर उसके विचारों के बारे में पढ़ें।

10.3.1 भारतीय धर्म

1916 में लिखी गई द रिलिजन ऑफ इंडिया नामक कृति में वेबर हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उल्लेख करता है। उसके अनुसार हिन्दू धर्म को जाति व्यवस्था के संबंध में देखना चाहिए। जाति व्यवस्था शुरू में काम-काज में विशेषज्ञता पर आधारित थी। लेकिन कालान्तर में यह वंशानुगत हो गई, ब्राह्मण जाति सबसे शक्तिशाली बनी। इस जाति के सदस्यों को ही शास्त्र पढ़ने का अधिकार था, अतः पारंपरिक विचारों का प्रचार इन्हीं के हाथों में केन्द्रित रहा। निम्न जातियाँ, खास कर के शूद्र अत्यंत शोषित थी, चूंकि उन्हें ''अपवित्र'' माना जाता था। इसलिये ये धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन से वंचित थी। परिणामस्वरूप वे मोक्ष के लायक भी समझी नहीं जाती थीं। मोक्ष या मुक्ति ही हिन्दुओं का परम उद्देश्य माना जाता है। वेबर के अनुसार हिन्दू धर्म का मूल मंत्र ''कर्म'' की अवधारणा है। मनुष्य की परिस्थिति पिछले जन्म में किये गये अच्छे या बूरे कर्मों का फल है। यदि व्यक्ति इस जन्म में धर्मानुसार कर्म करे, तब अगले जन्म में इसका उचित फल मिलेगा। ब्राह्मण का धर्म है शास्त्रों का अध्ययन करना, क्षत्रिय का धर्म है उसकी प्रजा और भूमि की रक्षा करना, वैश्य का धर्म व्यापार है और शूद्र से अन्य जातियों की सेवा अपेक्षित है। पिछले कर्मों से ही इस जन्म में व्यक्ति की जाति निर्धारित होती है, और अगले जन्म में ऊँची जाति में जन्म लेने के लिये धर्म का पालन अति आवश्यक है। लेकिन सबसे परम लक्ष्य मोक्ष ही है, जिससे जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिलती है। मोक्ष ही जीवन की अनिश्चिता और दुःख का अंतिम समाधान है।

भौतिक उन्नति वांछनीय है, किन्तु यह क्षणिक है। आध्यात्मिक उन्नति में स्थिरता है। आध्यात्मक पूँजी का मूल्य कभी कम नहीं होता। इसी के द्वारा जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिल सकती है। आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति से ही मोक्ष मिलता है। वेबर यह दिखाने का प्रयास करता है कि इसी आध्यात्मिक संयम वाली प्रकृति ने पूँजीवाद को

नहीं पनपने दिया। यह उल्लेखनीय है कि मध्यकालीन भारतीय नगर उत्पादन के विख्यात केन्द्र माने जाते थे। तकनीकी काफी विकसित थी। भौतिक परिस्थितियाँ उपयुक्त थी। परन्त, हिन्दू मान्यताओं के अनुरूप भौतिक क्षेत्र को विशेष महत्व नहीं दिया गया।

वेबर के अनुसार बौद्व और जैन धर्म शान्तिप्रिय धर्म थे। इन्होंने हिन्दू धर्म की रूढियों का विरोध किया। ये धर्म ध्यान (contemplation) पर ज़ोर देते थे। इनके अनुयायी सन्यासी या भिक्षुक थे, जिन्होंने लौकिक संसार को त्याग दिया था। सामान्य लोग भिक्षुक को दान देकर पुण्य प्राप्त कर सकते थे, परन्तु निर्वाण या मुक्ति पाने के लिये सांसारिकता को त्यागकर सन्यास लेना अनिवार्य था।

जाति व्यवस्था तथा हिन्दू धर्म, बौद्व धर्म और जैन धर्म के विश्वास एक दूसरे के पूरक थे, और पूँजीवाद के पनपने में बाधक सिद्व हुए, हालांकि पूँजीवाद के फूलने-फलन के लिये मध्यकालीन भारतीय नगर केन्द्र थे। भारत एक परंपरागत देश बना रहा जिसकी सामाजिक व्यवस्था अत्यंत मजबूत थी (देखिये कॉलिन्स 1986:111-118)।

19.3.2 चीनी धर्म

1916 में वेबर ने द रिलिजन ऑफ चाइना (चीनी धर्म) भी लिखी। चीन के पांरपरिक कन्फ्यूशियस धर्म का उल्लेख करते हुये उसने कहा कि यह धर्म भी प्रोटेस्टेंट धर्म की तरह ''इहलौकिक आत्मसंयम'' (this worldly asceticism) पर ज़ोर देता है। किन्तु प्रोटेस्टेंट नीतियाँ विश्व के नियंत्रण और परिवर्तन पर ज़ोर देती है जबकि दूसरी ओर कन्फ्यूशियस नीतियाँ संतुलन की परिकल्पना को अपनाती है। विश्व और ब्रह्मांड की व्यवस्था उपयुक्त अनुष्ठानों कौर कर्मकांडो द्वारा बनायी जाती है। बोलने-चालने के उचित ढंग को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता था। सत्ताधारी वर्ग (चीन का मंडारिन या पंडित वर्ग) बोलचाल के तरीकों और नीति नियमों का रक्षक था। सामाजिक व्यवस्था और संतुलन को बनाये रखने को इतना अधिक महत्व देने के परिणामस्वरूप विश्व को बदलने की प्रवृति (जो कि पूँजीवाद की मूल प्रवृति है) को प्रोत्साहन नहीं दिया गया। इस प्रकार कन्फ्यूशियस धर्म की प्रमुख नीतियाँ, संयम और संतुलन आदि पूँजीवाद की प्रवृति के विपरीत थी।

19.3.3 प्राचीन यहूदी धर्म

एंशिएंट जुडाइज़्म नामक वेबर की महत्वपूर्ण कृति 1917 और 1919 के दौरान लिखी गई। पाश्चात्य समाज के परिवर्तनों को समझने के लिये यह कृति अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यहूदी धर्म से ही इस्लाम और ईसाई धर्म का उद्गाम हुआ। ये सभी धर्म विश्व के परिवर्तन पर ज़ोर देते है। इस विचार के परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे दुनिया को नियंत्रित कर उसे बदलने को अनुयायी प्रेरित होते हैं। परिवेश पर नियंत्रण पाना ही आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता का प्रमुख लक्षण है। यहूदी पैगम्बर नैतिक पैगम्बर थे, जिन्होंने अनुयाइयों को अपने आदेशों और सदेशों द्वारा एक जुट करने का प्रयास किया। वे फिलिस्तीन के असंतुष्ट, शोषित किसानों को यह सीख देते थे कि दैविक प्रकोप देश को नष्ट कर देगा। वे कहते थे कि ईश्वर शहरों में बसे ऐशो-आराम की जिन्दगी बिताने वाले सत्ताधारी वर्ग से कुद्ध था। जब तक इस वर्ग का पतन नहीं होता और ईश्वर के मार्ग पर चलने वाला समाज स्थापित नहीं होता तब तक फिलिस्तीन में खुशहाली नहीं हो सकती। इस्लाम और ईसाई धर्म में भी नैतिक पैग़म्बर होते हैं, जो एक विशिष्ट प्रकार की आचार-पद्वति का प्रचार करते हैं।

1920 में वेबर का देहान्त हो गया। ईसाई धर्म और इस्लाम पर वेबर के लेख अधूरे ही रह गये। वह विश्व के धर्म संबंधी अपने सारे शोधकार्य को मिलाकर पूँजीवाद के उदय और विकास से जुड़े इस प्रश्न का समाधान खोजना चाहता था, परन्तु इस स्वप्न को वह साकार नहीं कर सका।

आगे पढ़ने से पहले सोचिए और करिए 2 का पूरा करें।

सोचिए और करिए 2

उपरोक्त जानकारी को पढ़ने के बाद, धर्म पर वेबर के विचारों को ध्यान में रखते हुए पैग़म्बर मुहम्मद और ईसा मसीह के बारे में जानकारी इकट्ठा करें। इसके आधार पर दो पृष्ठ का लेख लिखें। आपके लेख में जो महत्वपूर्ण बातें होनी चाहिए वे इस प्रकार हैः(क) उनकी जीवन वष्तान्त (ख) उनके उपदेश (ग) उनके उपदेशों का प्रभाव।

इस इकाई का उद्देश्य वेबर के धर्म संबंधी अध्ययन के मुख्य विषय यानि धार्मिक विचारों और मनुष्य के क्रियाकलाप के बीच संबंध को उजा़गर करना है। याद रहे, वेबर ने कर्ता की सार्थकता के संदर्भ में मानवीय कार्यों की व्याख्या की है। प्राचीन भारत में एक अछूत जाति व्यवस्था से विद्रोह क्यों नहीं कर सकता था इस प्रश्न के उत्तर में वेबर ने धार्मिक विश्वास पर आधारित उस व्यवस्था को दर्शाया, जिसमें व्यक्ति द्वारा विश्व को बदलने की रोक थी। इसी प्रकार पूर्वनियति और ईश्वरीय आह्वान की धारणाओं ने प्रोटेस्टेंट लोगों को मेहनत करने और पूँजी इकट्ठा करने के लिये प्रेरित किया। धर्म के संबंध में वेबर के विचारों से अनेक अमरीकी और भारतीय समाजशास्त्री प्रभावित हुए हैं।

वेबर की कृतियाँ पैगम्बरों की भूमिका को दर्शाती हैं। वेबर यह भी दिखाता है कि किस प्रकार धार्मिक विश्वास समाज के विशिष्ट वर्गों से संबंधित है। कम्फ्यूशियस धर्म सत्ताधारी मंडारिन वर्ग से जुड़ा था, हिन्दू धर्म जाति व्यवस्था को प्रोत्साहित करने वाले ब्रह्मणों से, और यहूदी धर्म शोषित, असंतुष्ट ग्रामीण लोगों से।

अगले भाग में, दर्खाइम और वेबर के विचारों की तुलना की जायेगी। लेकिन इससे पहले, बोध प्रश्न 3 के उत्तर दीजिए।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित वाक्यों को रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा पूरा करें।

क) वेबर के अनुसार, हिन्दू धर्म का प्रमुख विश्वास ..... है।

ख) हिन्दू धर्म का परम उद्देश्य .....की प्राप्ति है।

ग) ..... की कम्फ्यूशियस कल्पना के कारण ही चीन में पूँजीवाद पनप नहीं सका।

घ) विश्व का ..... और ..... ही आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता का प्रमुख लक्षण है।

ड) वेबर ने मानवीय क्रिया की व्याख्या के संदर्भ में की है।

10.4 दर्खाइम और वेबरः तुलना

प्रत्येक चिंतक की विचारपद्वति उसे एक दृष्टिकोण प्रदान करती है जिससे उसे व्यावहारिक मुद्दों का अध्ययन करने में मदद मिलती है। खंड की पहली इकाई में आपने पढ़ा है कि किस प्रकार दर्खाइम सामाजिक तथ्यों को बाहरी वस्तुओं की तरह देखता है। समाज में

स्वतंत्र अस्तित्व (suigeneris है, समाज व्यक्ति के पहले भी था, और व्यक्ति के बाद भी रहेगा। व्यक्ति को समाज का अंग बनाने के लिये समाज उस पर कुछ प्रतिबन्ध लगाता है।

दूसरी और वेबर व्यक्ति या कर्ता पर ध्यान केन्द्रित करता है। कर्ता की आचार पद्वति उसके मूल्यों और विश्वासों पर आधारित होती है। वेबर के अनुसार बोध अथवा जर्मन शब्द फर्स्टेहन (verstehen) द्वारा इनका अध्ययन करना समाजशास्त्री का उद्देश्य होना चाहिए। दर्खाइम तथा वेबर की इन विपरीत विचारधाराओं का प्रयास धर्म के अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है।

आइए, सबसे पहले दर्खाइम और वेबर की विश्लेषण की इकाइयॉ देखें। उन्होनें बहुत ही भिन्न धर्म-व्यवस्थाओं को चुना जिनकी सामाजिक पृष्ठभूमि भी बहुत भिन्न है।

10.4.1 विश्लेषण की इकाइयाँ

जैसे कि आपने पढ़ा है, दर्खाइम ने धर्म के सरलतम रूप का अध्ययन किया। उसने जनजातीय समाजों का अध्ययन किया है जिनमें सामूहिक जीवन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। समान मान्यताएँ और भावनाएँ ऐसे समाजों को एकात्म करती है। इन समाजों का कोई लिखित इतिहास नहीं होता है। धर्म और कुल (clan) व्यवस्था का गहरा संबंध होता है। इस प्रकार दर्खाइम धर्म को एक सामूहिक तथ्य के रूप में देखता है जिससे सामाजिक बंधन और अधिक मज़बूत बनते है।

दूसरी ओर वेबर के विश्लेषण की इकाई में विश्व के विकसित धर्म के अध्ययन हैं। उनके ऐतिहासिक आधार और आर्थिक गतिवधियों में उनके योगदान पर उसका अपना ध्यान आकृष्ट होता है। वह विश्व के इन महान धर्मों को समकालीन सामाजिक परिस्थितियों की प्रतिक्रियाओं के रूप में देखता है। उदाहरण के लिये बौद्व धर्म और जैन धर्म ने जाति व्यवस्था का विरोध किया गया। यहूदी धर्म शोषित फिलिस्तीनी ग्रामवासियों का धर्म था। प्रोटेस्टेंट धर्म कैथोलिक चर्च की विलासिताओं के प्रति विरोध का प्रतीक था। संक्षेप में दर्खाइम सरलतम धर्मों के अध्ययन द्वारा धर्म को सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने में सहायक मानता है। दूसरी ओर वेबर देखता है कि किस प्रकार आचार-विचार के नये तरीके विकसित करने में धर्म की रचनात्मक भूमिका होती है।

10.4.2 धर्म की भूमिका

यह कहा जा सकता है कि दर्खाइम धर्म को सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति मानता है। टोटम की पूजा का वास्तविक अर्थ है, कुल (clan) की पूजा। इस प्रकार कुल द्वारा सम्मानित विचार और विश्वास व्यक्तिगत चेतना के अंग बन जाते है। पवित्र और लौकिक क्षेत्रों के बीच मध्यस्थता अनुष्ठानों द्वारा की जाती है। कुछ महत्वपूर्ण अनुष्ठानों में कुल के सारे सदस्य भाग लेते हैं, जिससे सामूहिक उत्साह उत्पन्न हो जाता है। व्यक्ति सामाजिक बंधनों में बाँधे जाते हैं, समाज की महानता और शक्ति का उन्हें अहसास दिलाया जाता है।

दूसरी ओर, वेबर धर्म को आर्थिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में देखना चाहता है। समाज की अन्य व्यवस्थाओं से उसका पारस्परिक संबंध किस प्रकार का है? समाज और धर्म एक दूसरे को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

प्रत्येक समाज की अलग-अलग सांस्कृतिक विशेताओं पर वेबर ध्यान देता है। धर्म को वह उस व्यापक ऐतिहासिक प्रक्रिया का अंग मानता है, जिसके अंतर्गत पूँजीवाद, औद्योगीकरण और तर्कसंगति का विकास शामिल है। इस खंड की इकाई 11 में इस मुद्दे पर और अधिक विस्तार से चर्चा की जायेगी।

आपने पढ़ा कि किस प्रकार इन चिंतकों के विश्लेषण की इकाइयाँ भिन्न थीं। धर्म की भूमिका के संबंध में भी उनके विचार भिन्न-भिन्न थे। परिणामस्वरूप दर्खाइम और वेबर द्वारा इस्तेमाल की गई परिकल्पनाओं और अवधारणाओं में भी अंतर है। वेबर बिना झिझक के उन परिकल्पनाओं का प्रयोग करता है जिन्हें दर्खाइम ने हमेशा दूर रखा। आइए इस बात पर आगे और अधिक विस्तार से चर्चा करें।

सोचिए और करिए 3 विश्व के मानचित्र पर i) भारत, ii) चीन, iii) फिलिस्तीन, iv) आस्ट्रेलिया को अंकित कीजिए। इन देशों में व्याप्त धर्मों की सूची बनाइए।

10.4.3 देवता, भूत-प्रेत और पैग़म्बर

दर्खाइम इस बात से सहमत नहीं है कि देवताओं, भूत-प्रेतों जैसी रहस्यमय बातों से धर्म संबंधित है। वह मानता है कि स्वंय समाज को ही पूजा जाता है, जिसे प्रतीकात्मक वस्तुओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। वेबर देवताओं और भूत-प्रेतों के बारे में लिखने से नहीं हिचकता। याद रखें, वह ऐसे धर्मों का अध्ययन करता है जिनका विकास जनजातीय धर्मों की तुलना में बहुत देर से हुआ। इन धर्मों में व्यक्तिगत गुणों का समावेश है, और उनमें एक प्रकार की अमूर्तता है। अमूर्तता का संबंध प्रतीकात्मकता से होता है।

आइए, इस संदर्भ में टोटमवाद का उदाहरण लें। दर्खाइम के अनुसार, टोटम कुल का प्रतीक है। वेबर ऐसे टोटम का उदाहरण देता है जिसकी पूजा भी होती है, साथ-साथ उसकी आहूति देकर उसे खाया भी जाता है। ऐसी दावत में जनजाति के देवताओं और भूत-प्रेतों को भी बुलाया जाता है। टोटम प्राणी को खाने से कुल के सदस्यों में एकात्मता की भावना उत्पन्न होती है। वे मानते है कि प्राणी की आत्मा उनमें प्रवेश करती है। इस प्रकार के टोटम को एक चिन्ह या प्रतीक मात्र नहीं मानते हैं बल्कि उसका सार-तत्व आपस में बॉटकर (जो कि न सिर्फ हाड़-मॉस अपितु आत्मा भी है) कुल के सारे सदस्य एकात्म हो जाते है।

दर्खाइम की तुलना में वेबर पैग़म्बरों की भूमिका को अधिक महत्वपूर्ण मानता है। यहूदी धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म के इतिहास में अनेक नैतिक पैग़म्बरों का उल्लेख है जिन्हें लोग ईश्वर का प्रतिनिधि मानते थे, और यह मानते थे कि ईश्वर के साथ पैग़म्बरों का सीधा सम्पर्क है। इस संदर्भ में इब्राहीम, मूसा, मुहम्मद, ईसा जैसे करिश्माई नेतृत्व वाले व्यक्तियों के नाम गिने जा सकते हैं, जिन्होंने लोगों को अत्यधिक आकृष्ट किया।

संक्षेप में, दर्खाइम इस बात को नकारता है कि धर्म मूलतः भूत-प्रेतों और देवताओं से संबंधित है। वह मानता है कि धर्म के द्वारा स्वंय समाज को ही पूजा जाता है ताकि सामाजिक बंधन और अधिक मज़बूत बनें और व्यक्ति समाज की शक्ति और अमरत्व को अनुभव कर सकें। वेबर धर्म के प्रतीकात्मक पक्ष पर ध्यान देता है। भूत-प्रेत और देवताओं जैसी अमूर्त कल्पनाएं इन्हीं प्रतीकात्मक विचारों के उदाहरण होते है। धार्मिक विश्वासों का स्वरूप बदलने और पुनर्निमित करने में करिश्माई व नैतिक पैग़म्बरों के योगदान के संबंध में भी वह चर्चा करता है।

आइए, अब धर्म और विज्ञान के अंतसंबध के बारे में दर्खाइम और वेबर के विचारों पर एक नज़र डालें।

10.4.4 धर्म और विज्ञान

जैसा कि आपने पढ़ा है, दर्खाइम धर्म और विज्ञान दोनों को सामूहिक प्रतिनिधान मानता है। वैज्ञानिक वर्गीकरण मूलतः धर्म से लिया जाता है। इस प्रकार, धर्म और विज्ञान के बीच कोई

संघर्ष या भेद नहीं हो सकता है। वेबर इससे सहमत नहीं है। विश्व के धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा उसने स्थापित किया कि किस प्रकार भारतीय और चीनी नेताओं ने पूँजीवाद को पनपने का अवसर नहीं दिया। प्रोटेस्टेट धर्म ने ही तर्कसंगत पूँजीवाद के पनपने के लिये उपयुक्त विचारधारा प्रदान की। वेबर के अनुसार विज्ञान तर्कसंगति का प्रतीक है जो कि धर्म की रहस्यवादी और परंपरागत मान्यताओं को चुनौती देता है। विज्ञान मनुष्य को आनुभाविक जानकारी देता है और उसे अपने परिवेश को समझने में और उस पर नियंत्रण करने में सहायता देता है। इस प्रकार, वेबर मानता है कि धर्म और विज्ञान एक दूसरे से विपरीत है।

इन चिंतकों के विचारों की तुलना करना आसान नहीं है जिन समाजों की वे बात कर रहे है, वे इतने भिन्न हैं कि उनके निष्कर्ष में अंतर होना स्वाभाविक ही है। फिर भी कुछ बातें उल्लेखनीय हैं। दर्खाइम धर्म को वह माध्यम मानता है, जिसके द्वारा व्यक्ति समाज की भौतिक और नैतिक शक्ति को स्वीकार करता है। धर्म वस्तुओं और परिकल्पनाओं के वर्गीकरण का एक प्रयास है। विज्ञान का उद्‌गम इसी से होता है।

वेबर धर्म का अध्ययन अनुयाईयों द्वारा दिये गये अर्थों और उनके क्रियाकलापों और अन्य सामाजिक गतिविधियों पर उसके प्रभाव के संदर्भ में करता है, विज्ञान धर्म को चुनौती देता है, और भूत-प्रेतों को भगाकर उनकी जगह प्रयोगसिद्व जानकारी स्थापित करता है।

धर्म के अध्ययन हेतु विचार दर्शन की दृष्टि से दर्खाइम एंव वेबर में तुलना करते हुए तालिका 10.1 में दिखाया गया है कि इन दोनों विचारकों ने किस प्रकार धर्म को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा।

तालिका 10.1: धर्म के अध्ययन हेतु विचार दर्शन

	एमिल दर्खाइम का विचार दर्शन	मैक्स वेबर के विचार दर्शन
i)	प्राचीन धर्मों का अध्ययन	विश्व के विकसित धर्मों का अध्ययन
ii)	धर्म सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है	धर्म, राजनीतिक, अर्थव्यवस्था, इतिहास आदि अंतर्संबंधित है
iii)	''देवता'', ''भूत-प्रेत'', ''पैगम्बर'' जैसी कल्पनाओं की उपेक्षा	इन्हीं परिकल्पनाओं का भरपूर इस्तेमाल
iv)	धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। अतः इनके बीच संघर्ष नहीं है।	धर्म और विज्ञान विपरीत है।

बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें।

क) दर्खाइम धर्म के ..... रूप का अध्ययन करता है, जबकि वेबर ..... का अध्ययन करता है।

ख) ईसा, मूसा, ईब्राहीम और मोहम्मद ..... है।

ग) भूत-प्रेत और देवता की कल्पनाएं ..... का परिणाम है।

10.5 सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि एमिल दर्खाइम और मैक्स वेबर ने किस प्रकार धर्म को सामाजिक तथ्य मानकर उसका अध्ययन किया। सबसे पहले हमने दर्खाइम के विचारों पर चर्चा की। सरलतम धर्म का अध्ययन करने में उसका उद्देश्य, धर्म की व्याख्या, टोटमवाद का अध्ययन, धर्म और विज्ञान के बीच अंतर्संबंध के पक्षों पर हमने नज़र डाली।

इसके पश्चात् हमने वेबर के योगदान की चर्चा की। ''प्रोटेस्टेंट एथिक'' संबंधित उसके विचार न दोहराते हुए भी बार-बार उसका उल्लेख किया गया। हमने देखा कि किस प्रकार वेबर ने भारतीय और चीनी धर्मों और प्राचीन यहूदी धर्म का अध्ययन किया, और पूँजीवाद के उदय के संदर्भ में उसने किस प्रकार धर्म और अन्य सामाजिक उप-व्यवस्थाओं के बीच अंतर्संबंध को स्थापित किया।

अंत में हमने इन चिंतकों के विचारों में निम्नलिखित पक्षों में अंतर देखा।

1) विश्लेषण की इकाइयाँ।

2) धर्म की भूमिका।

3) परिकल्पनाओं और अवधारणाओं में अंतर।

4) धर्म और विज्ञान का अंतर्संबंध।

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) क) इससे जटिल धर्म को समझना आसान हो जाता है।

ख) विश्वास और अनुष्ठान

ग) आम, साधारण वस्तुओं

ii) दर्खाइम के अनुसार जादू टोना निर्जी और स्वार्थी मामला है। इसमें जादूगर और ग्राहक के बीच ही संबंध होता है। दूसरी ओर धर्म सार्वजनिक और सामाजिक है। सामाजिक बंधनों द्वारा अनुयायी एक दूसरे के साथ जुड़ जाते है। इस प्रकार, सामाजिक एकात्मता को बढ़ावा मिलता है।

बोध प्रश्न 2

i) टोटम के सदस्य अपने आप को एक समान पूर्वज के वंशज मानते हैं। इसलिए खून का रिश्ता न होते हुए भी वे एक दूसरे से शादी नहीं कर सकते हैं।

ii) समाज व्यक्ति से पहले था और उसके जाने के बाद भी रहेगा। समाज व्यक्ति से ज्यादा शक्तिशाली और अमर है, अतः उसे पूजा जाता है।

iii) दर्खाइम धर्म और विज्ञान दोनों को सामूहिक प्रतिनिधान मानता है। उसके अनुसार, विज्ञान का उद्गम धर्म से ही हुआ। व्यक्ति, प्रकृति और समाज को समझने के इन दोनों प्रयासों (विज्ञान और धर्म द्वारा) के बीच संघर्ष असंभव है।

बोध प्रश्न 3

i) क) कर्म की धारणा

ख) मोक्ष

ग) संतुलन

घ) नियंत्रण, परिवर्तन

ड) कर्ता की सार्थकर्ता

बोध प्रश्न 4

i) क) सरलतम, विश्व के धर्मों

ख) नैतिक पैगम्बर

ग) प्रतीकात्मकता

10.7 संदर्भ

कालिन्स, रैंडल, 1986. मैक्स वेबरः ए स्केलेटन की, सेज पब्लिकेशन इंकः बेवर्ली हिल्स

दखाईम, एमिल, 1964. एलिमेंटरी फॉर्म्स ऑफ द रिलिजिंस लाइफ ऐलन एण्ड अन्विनः लंदन (पुनः मुद्रित)

दखाईम, एमिल, और मॉस, मार्सेल, 1963. प्रिमिटिव क्लासिफिकेशन यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेसः शिकागो (पुनः मुद्रित)

जोन्स, रॉबर्ट एंलन, 1986. एमिल दर्खाइम : ऐन इंट्राक्शन टु फोर मेजर वर्क्स, सेज पब्लिकेशन्सः बेवर्ली हिल्स

मॉस, मार्सेल, 1954.द गिफ्टः फार्म्स एण्ड फंक्शन्स ऑफ एक्सचेंज इन आर्केइक सोसायटीच यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेसः शिकागो

वेबर मैक्स, 1958. द प्रॉटेस्टेंट एथिक एण्ड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म स्क्रिबरनः न्यूयार्क

वेबर मैक्स. 1951. द रिलीजन ऑफ चाइना कन्फ्यूशियनिज्म एण्ड टाओइज्म फ्री प्रेसः ग्लेनको